बी॰ए॰ I आनर्स, हिन्दी प्रतिष्ठा

विधाओं वर्गीका शेष,

डॉ॰ सतीश चन्द्र पाठक.

यहाँ प्रस्तुत साहित्य के विभिन्न रूपों, जिन्हें साहित्य की विधाएं कहा जाता है, के लक्षणों को संक्षेप में जान लेना उपयोगी होगा।

प्रबंध काव्य- प्रबंधकाव्य ऐसी कथात्मक रचना है जिसमें पूर्वापर के सम्बंध का निर्वाह किया जाता है।

तात्पर्य यह कि इसमें पूर्व + अपर अर्थात् ऊपर और नीचे या पहले और बाद में कथित बातों का सम्बन्ध रहता है यानी प्रबंधकाव्य एक ऐसी पद्यात्मक विधा है जिसमें कोई कथा होती है। उसमें ऊपर और नीचे का सम्बन्ध अनिवार्य रूप से होता है। जैसे रामचरितमानस एक प्रबंध काव्य है इसमें

राम की कथा कही गयी है। इसके साथ ही इसमें पूर्वापर का सम्बन्ध भी है। जैसे सात काण्डों में यह काव्य बंटा हुआ है किन्तु सबके सब एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। पहले बालकाण्ड है पुनः अयोध्या काण्ड और अन्त में उत्तरकाण्ड। इसके सुसंगत अर्थ को ग्रहण करने के लिए बालकाण्ड से उत्तरकाण्ड की ओर बढ़ना चाहिए। ~~यह क्रम~~ यदि यह क्रम भंग हुआ तो अर्थों में तथा कथा में संगति नहीं रह पाएगी। यही पूर्वापर का सम्बन्ध हुआ। इसका अनुपालन प्रबन्ध काव्य की अनिवार्य शर्त है। ऐसा नहीं होने पर प्रबन्ध काव्य की स्थिति समाप्त हो जाएगी।

मुक्तक काव्य

मुक्तक काव्य मोती के समान मुक्त होते हैं। इनमें पूर्वापर का सम्बन्ध नहीं होता। ये अपने आप में पूर्ण होते हैं; स्वतन्त्र होते हैं। इसके अर्थ की संगति के लिए ऊपर या नीचे के प्रसंगों की आवश्यकता नहीं होती।

उदाहरणार्थ कोई गीत इसमें पूर्णतः प्रमाणित करता है। उसमें किसी अन्य प्रसंग की आवश्यकता नहीं होती। गीत जितना छोटा या बड़ा हो उसी में उसकी सारी अर्थवत्ता एवं प्रभाव छिपा होता है। उससे इतर किसी भी पंक्ति या प्रसंग से वह सर्वथा असम्बद्ध होता है अतः वह गीत अपने आप में पूर्ण होता है उसको ही पढ़ या सुन लेने से हमें तृप्ति हो जाती है किसी अन्य प्रसंग की अपेक्षा उसमें नहीं होती। एक और उदाहरण लें - कबीर के दोहे हमारे पाठ्यक्रम में हैं जिनकी संख्या दस है। सारे दोहों के अर्थ अलग-अलग हैं। ये दोहे अपने आप में पूर्ण हैं। यदि हम दोहे के क्रम को विशृंखलित भी कर दें तब भी उसके अर्थ में विसंगति नहीं आती। क्योंकि दोहे अपने आप में पूर्ण हैं। जबकि प्रबन्ध काव्य में ऐसी सुविधा नहीं है। वहाँ तो कथात्मक सूत्र ऊपर और नीचे से इस तरह से गुम्फित होते हैं

बिना ऊपर और नीचे का पढ़े हम अर्थ की संगति नहीं बिठा सकते।

चम्पू काव्य इस काव्य में गद्य एवं पद्य का मिश्रण होता है अतः इसे मिश्रकाव्य भी कहा जाता है। किन्तु आजकल यह काव्य प्रचलन में नहीं है।

प्रबंध काव्य के दो भेद -

(i) महाकाव्य - किसी महान नायक के संपूर्ण जीवन को रूपायित करने वाली वह विधा है जिसमें महद् चरित्र, महद् उद्देश्य एवं महद् अनुष्ठान का संयोजन हो।

महाकाव्य में नायक के संपूर्ण जीवन को विषय बनाया जाता है। सच पूछिये तो महाकाव्य की जो शास्त्रीय परिभाषा है उसके अनुरूप महाकाव्य की रचना अत्यंत कठिन है - जैसे यह सर्गबद्ध होता है, उसका नायक कोई देवता, क्षत्रिय या ब्राह्मण होता है, उसमें अनेक उपकथाएं चलती हैं, इसमें दिन, रात, ... इत्यादि का वर्णन होता है। वर्तमान में महाकाव्य की शास्त्रीय परिभाषा के अनुकूल इनका सर्जन कठिन है।

(ii) खंडकाव्य - खंडकाव्य में नायक के जीवन के एक विशिष्ट कालखंड को काव्य का विषय बनाया जाता है। इसमें प्रबंधन का साधन होता है और कथात्मक एकता भी होती है। इसमें महाकाव्य की जैसी विशदता नहीं होती अतः अनेक कथा या उपकथाओं का संयोजन भी नहीं होता। हाँ, इतना आवश्यक है कि नायक के जीवन का जो अंश चित्रित किया जाता है वह विशिष्ट होना चाहिए।